एक को जानो, एक को मानो, एक हो जाओ।

मानव एकता दिवस के उपलक्ष में विशेष सत्संग।

1981 से ही 24 अप्रैल को संत निरंकारी मिशन मानव एकता दिवस के रूप में मनाते आ रहा है। जाती-पाँती, धर्म-सम्प्रदाय के भेदभाव से ऊपर उठकर अध्यात्म की सुदृढ़ नींव पर आधारित जीवन जीने की प्रेरणा देने वाले बाबा गुरबचन सिंह जी महाराज अंतिम स्वांसो तक मानव को मानव के नजदीक लाने का अति विशिष्ठ कार्य करते रहे| आध्यात्मिक जीवन अपनाकर वे मानव एकता के लिए जिए और मानव एकता के लिए ही 24 अप्रैल, 1980 को अपना सर्वोच्च बलिदान दिया|

मुंबई में भी यह दिवस चेंबूर, वडाला, अंधेरी, गोरेगांव, कांदिवली, भायंदर, घाटकोपर, कलवा, ठाणे, घंसौली, सी.बी.डी. बेलापुर जैसे 12 स्थानों पर मनाया गया। हजारों की संख्या में भक्तगण मानवता के मसीहा बाबा गुरबचन सिंह जी के जीवंत

शिक्षा को धारण करने हेतु सत्संग में उपस्थित हुए। श्रद्धालु भक्तों ने जो बलिदान 1980 के समय में हुए उनसे प्रेरणा लेते हुए मानवता के हित में योगदान देने का दृढ़ निश्चय किया।

देशभर में 3000 तक एवं विदेशों में 200 तक मिशन की ब्रांचों ने मानव एकता दिवस के रूप में विशेष सत्संग का लाभ लिया।

भारत के बाहर भी कई देशों में 22 अप्रैल को ही मानव एकता दिवस मनाया गया। सतगुरु माता सविंदर हरदेव जी के पावन सानिध्य में 22 अप्रैल को यह समागम सेन फ्रांसिसको में सम्पन हुआ।